THE
ChangeMakers

July 2020 Issue 10

Transforming Rural Bihar

कोरोना से बचाव की पहल विशेषांक

कोविड-19 : जागरूकता व संक्रमण से बचाव हेतु जीविका दीदियों के सार्थक प्रयास
Page 02

Mask Production & Supply
Page 04

महिला सशक्तीकरण के मायने ग्राहक सेवा केन्द
Page 09

बड़की दीदी
Page 25

From the editor's desk

Dear Readers,

Greetings from JEEViKA. Wishing good health in this testing times.

We are happy to share the new edition of "The Changemakers" which features the initiatives of JEEViKA didis to combat COVID-19 pandemic. JEEViKA didis as "Cororna Warriors" are continuously serving the rural communities by generating awareness on social distancing and masking; providing banking services through customer service points, extending loans to the SHG members with migrant family members to initiate alternate livelihood options and making masks available to the rural communities by initiating quality and affordable mask production in large scale. This edition is an attempt to salute the warriors by featuring their valiant stories.

Our regular segments- "Didi ki Kahani, Didi ki Zubani ", "Badki Didi" and "Mann ki Kalam Se" have focused on our concerted efforts to fight COVID-19.

Wishing you healthy living and happy reading.

Regards
Mahua Roy Choudhury
pc.gkm@brlps.in

EDITORIAL TEAM

- **Braj Kishore Pathak**
  Officer on Special Duty
- **Mrs. Mahua Roy Choudhury**
  Program Coordinator (G&KM)
- **Mr. Pawan Kr. Priyadarshi**
  Project Manager (Communication)

CONTENT COMPILATION TEAM

- **Mr. Rajeev Ranjan**
  Manager Communication, Samastipur
- **Mr. Biplab Sarkar**
  Manager Communication, Katihar
- **Mr. Abhijeet Mukherjee**
  YP-KMC, SPMU
- **Mr. Raushan Kumar**
  Manager Communication, Boxur
- **Mr. Vikash Kumar Rao**
  Manager Communication, Supaul

संदेश

श्री बालामुरूगन डी. (भा.प्र.से.)
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)
राज्य मिशन निदेशक, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियानं

वैश्विक महामारी कोविड–19 के संक्रमण काल में जीविका दीदियां पूरी तरह 'कोरोना वारियर्स' के रूप में नजर आ रही हैं। जीविका दीदियों ने अपने आत्मबल, साहस और कुशल रणनीति के सहारे कोरोना महामारी के प्रति जन जागरूकता लाने एवं कोरोना के संक्रमण की रोकथाम के लिए विभिन्न स्तरों पर सफलतापूर्वक कार्य किया है। कोरोना के कारण हुए लॉकडाउन जैसी विषम परिस्थिति में भी जीविका दीदियों ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहण सफलतापूर्वक किया। जीविका दीदियों ने चुनौतियों को अवसर में बदलने का शानदार उदाहरण हमसबों के समक्ष प्रस्तुत किया है। दीदियों के प्रयास का यह परिणाम हुआ कि बिहार की आम जनता कोरोना के प्रति जागरूक हुई एवं उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्त्तन आया। हालांकि जीविका दीदियॉ द्वारा इस मुश्किल समय में किया गया प्रत्येक कार्य ही रेखांकित करने योग्य है लेकिन मास्क का निर्माण एवं उसका विपणन, राशन कार्ड का निर्माण, सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थियों के बीच इमरजेंसी फंड का वितरण, प्रवासी मजदूरों के परिजनों को समूह से जोड़ना, प्रवासी मजदूरों को स्थानीय स्तर पर काम उपलब्ध कराना, खाद्य सुरक्षा निधि की मदद से जरूरतमंद दीदियों के बीच राशन की उपलब्धता, ग्राहक सेवा केन्द्र द्वारा बैंकिंग सुविधा की उपलब्धता, मनरेगा के कार्यों में सहयोग, पौधरोपण आदि सर्वाधिक प्रमुख हैं। इन कार्यों से जीविका दीदियों ने जनहित एवं समाजहित में अविस्मरणीय योगदान दिया है। शासन–प्रशासन द्वारा जीविका परिवार को मिलती सराहना एक उपलब्धि है। यह सच है कि जीविका दीदियॉ कठिनाईयों के बाद और सबल होकर सामने आती हैं और कोरोना काल इसका उदाहरण है।

CONTENTS

कोरोना काल : दीदियों के प्रयास ने दिखाया रंग..... 01
कोविड–19 : जागरूकता व संक्रमण से बचाव हेतु जीविका दीदियों के सार्थक प्रयास..... 02
Mask Production & Supply..... 04
कोरोना काल में बेसहारा हुए अतिनिर्धन परिवारों को जीविका से मिला सहारा..... 06
महिला सशक्तीकरण के मायने ग्राहक सेवा केन्द्र..... 09
Corona Warriors lending a helping hand..... 11

संदेश

श्री अरविन्द कुमार चौधरी (भा.प्र.से.)
सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

कोविड–19 के संक्रमण काल में जीविका दीदियों ने कोरोना वॉरियर्स के रूप में अनवरत सेवा प्रदान कर अपनी पहचान स्थापित की है। जिला प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, पंचायती राज विभाग, मनरेगा आदि के साथ समन्वय स्थापित कर जीविका दीदियों ने हर विपरीत परिस्थिति में कदम से कदम मिलाकर चलने का काम किया। दीदियों ने समेकित रूप से चुनौतियों का सामना किया और उनपर विजय भी प्राप्त की। मुश्किल समय में जीविका दीदियों ने धैर्य के साथ कार्य करते हुए लोगों के जीवन को आसान बनाने में योगदान दिया। कोरोना के प्रति जन जागरूकता, वैकल्पिक बैंकिंग सुविधा की उपलब्धता, राशन कार्ड निर्माण का कार्य, मनरेगा के कार्यों में सहयोग प्रदान करने, प्रवासियों के सर्वेक्षण एवं उनतक योजनाओं का लाभ पहुंचाने, मास्क का उत्पादन इन सभी कार्यों में जीविका दीदियों ने अपने दायित्व का निर्वहण किया। तमाम कठिनाइयों एवं मुश्किलों के बीच भी जीविका दीदियों के कदम नहीं डगमगाये। कोरोना के खात्मे के लिए दीदियों का संघर्ष अनवरत जारी है। जीविका दीदियों के इस संघर्ष, प्रयास एवं पहल को संग्रहित कर जनमानस के सामने लाना एक सकारात्मक कदम है। 'चेंज मेकर्स' का यह अंक दीदियों के संघर्ष पर उनकी उपलब्धि का ऐतिहासिक दस्तावेज साबित होगा जो लोगों को हमेशा कठिनाई से लड़ने का उत्साह देगा। इस महत्त्वपूर्ण विषय–वस्तु पर अंक के प्रकाशन के लिए चेंज मेकर्स टीम को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

CONTENTS

दीदी की कहानी दीदी की जुबानी 13
Measures for Vulnerability Reduction..... 17
Ensuring Supply of Essential Goods..... 19
Capitalizing on Custom Hiring Centers and Producer Companies.. 21
The response in SOCIAL MEDIA..... 23
बड़की दीदी 25

कोरोना काल : दीदियों के प्रयास ने दिखाया रंग

हर मुश्किल एवं कठिन परिस्थिति के बाद जीविका दीदियों के आत्मविश्वास में और ज्यादा निखार आता है। पिछले एक दशक से ज्यादा समय से बिहार में हो रहे बदलाव के साथ जीविका की दीदियाँ जुड़ी रही हैं और समस्या के समाधान के रूप में सामने आईं। बिहार के बदलाव में जीविका दीदियों के कार्यों के हस्ताक्षर हर जगह उपलब्ध हैं। दीदियों ने प्राय : बिना किसी शोर के सफलता का परचम लहराया और कई बार कुरीतियों को दूर करने के लिए पुरजोर आवाज भी लगाई।

पिछले करीब 6 माह से पूरी दुनिया कोविड–19 संक्रमण से कठिनाई में है और बिहार भी इससे अछूता नहीं है। कोविड–19 के कहर से बिहार में भी मुश्किलें खड़ी हुई। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार द्वारा विभिन्न स्तरों पर प्रयास आरंभ किये गये। सरकारी प्रयासों की सफलता के लिए विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों द्वारा कार्य किए जा रहे है। बिहार को कोरोना के भंवरजाल में फंसे देख जीविका दीदियां भी मूक दर्शक नहीं रहीं और राज्य के अलग–अलग क्षेत्रों से जीविका दीदियों ने अपने प्रयास शुरू किए। इस दिशा में प्रथमत : कोरोना के प्रति जनमानस को जागरूक करने का कार्य किया गया। इसके बाद विभिन्न माध्यमों से उनके व्यवहार में परिवर्तन लाने के प्रयास किये गए। जब राज्य में सबके लिए मास्क की अनिवार्यता की बात आई तो दीदियों ने कठिन परिस्थितियों के बीच रहकर मास्क का निर्माण शुरू कर दिया। मास्क के उत्पादन एवं विपणन के साथ दीदियों ने लोगों के बीच मास्क के उपयोग पर बल दिया। मास्क के निर्माण के साथ दीदियों ने राशन कार्ड से वंचित परिवारों के बीच 1 हजार रूपया के वितरण के लिए सर्वे का कार्य किया तथा राशन कार्ड बनाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। सतत् जीविकोपार्जन योजना द्वारा हजारों परिवारों को इमरजेंसी फंड देने के अतिरिक्त ग्राहक सेवा केन्द्र द्वारा बैंकिंग सुविधा उपलब्ध कराने में भी दीदियों ने अपना योगदान दिया। प्रवासी मजदूरों की काउंसलिंग, उन्हें हुनरमंद बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने एवं रोजगार उपलब्ध कराने के कार्य में दीदियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। दीदियों ने प्रवासी मजदूरों के परिवारों की महिलाओं को समूहों के साथ जोड़ा ताकि उन्हें सरकारी योजनाओं के लाभ प्राप्त हो सके। कोरोना संक्रमण काल में मनरेगा के कार्यों में सहयोग, पौधारोपण आदि भी जीविका के महत्त्वपूर्ण कार्य रहे। दीदियों ने राशन से वंचित परिवारों के बीच खाद्य सुरक्षा निधि से राशन की उपलब्धता सुनिश्चित करायी। कई स्थानों पर दीदियों ने सामूहिकता का पाठ पढ़ाते हुए 'एक मुट्ठी अनाज अभियान' चलाकर वैसे परिवारों को राहत पहुँचायी जिनके पास खाद्य सामग्री की कमी थी। कई स्थानों पर बीज के वितरण के अतिरिक्त सब्जी की दुकानों एवं राशन की दुकानों का सफलतापूर्वक संचालन भी किया गया।

जीविका दीदियों के इन सार्थक प्रयासों ने रंग दिखाया। दीदियों के प्रयासों से लाखों लोग कोरोना के प्रति जागरूक हुए और उन्होंने खुद को इसके संक्रमण से बचाया। लाखों लोगों के समक्ष भोजन की समस्याओं का समाधान हुआ। लोगों के बीच रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हुए। हजारों परिवार सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हुए। कोरोना जैसी मुश्किल परिस्थिति में दीदियों ने अपने प्रयास से संघर्ष का रास्ता सफलतापूर्वक तय किया। दीदियों ने अपनी हिम्मत और हुनर का परिचय देते हुए जन सामान्य के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

कोविड-19
जागरूकता एवं संक्रमण से बचाव हेतु जीविका दीदियों के सार्थक प्रयास

राजीव रंजन, प्रबंधक संचार, समस्तीपुर

विपरीत पस्थितियों का सामना करने का हुनर और हर समस्या के समाधान के लिए प्रतिबद्ध जीविका दीदियों ने कोविड–19 के समय भी विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करवायी। दीदियाँ बिना थके, बिना रूके निरंतर सेवा कार्य में लगी रहीं। कोरोना वारियर्स के रूप में इन्हें हर मोर्चे पर उपस्थित देखा गया। स्थानीय प्रशासन, राज्य सरकार, केन्द्र सरकार सब ने जीविका के कार्यो की सराहना की। जीविका दीदियों ने राज्य के हर कोने में जनमानस को कोरोना संकमण से बचाव हेतु जागरूक किया एवं विभिन्न प्रकार से सार्थक प्रयास किए ताकि आमलोगों को कोरोना से कम से कम नुकसान हो एवं उन्हें कठिनाइयों का भी कम से कम सामना करना पड़े। संकमण और इसके कारण हुए विभिन्न चरणों के लॉक डाउन की अवधि में विभिन्न कार्यो के कुशल कियान्वयन के लिए जीविका दीदियों ने अलग–अलग रणनीतियाँ अपनायीं और उन्हें शत–प्रतिशत कियान्वित किया।

बिहार की आबादी का वह भाग जो गांवों में रहती है को कोरोना के प्रति जागरूक करना एक बड़ी समस्या थी और इसका हल जीविका दीदियों ने निकाला। जीविका द्वारा सर्वप्रथम 1 करोड़ से अधिक कैडर एवं दीदियों को विभिन्न माध्यमों से कोरोना संकमण से बचने के उपाय की रणनीतियों पर प्रशिक्षित किया गया। बाद में इन दीदियों द्वारा लिफलेट, मोबाइल, आडियो, वीडियो आदि माध्यमों से बिहार की बड़ी आबादी को कोरोना संक्रमण से बचने के उपायों के प्रति जागरूक किया गया। मोबाइल वाणी जैसी गतिविधियों ने जनजागरूकता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जीविका दीदियों के प्रयासों का नतीजा यह निकला कि लोगों के व्यवहार में परिवर्तन आया जिसके कारण उनमें संकमण के प्रसार की गति कमजोर हो सकी। इसी बीच सरकार द्वारा राज्य में सभी लोगों के लिए मास्क का प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया। इतनी बड़ी आबादी के लिए मास्क की उपलब्धता भी एक बड़ी चुनौती थी, जिसे जीविका दीदियों ने स्वीकार किया। नतीजा यह निकला कि हजारों दीदियों ने

कठिन परिस्थितियों के बीच मास्क का निर्माण शुरू कर दिया। मास्क के उत्पादन एवं विपणन के साथ दीदियों ने मास्क के उपयोग पर निरंतर बल दिया। जिला प्रशासन, स्वास्थ्य महकमा, मनरेगा, पंचायती राज प्रतिनिधियों के बीच जीविका दीदियों द्वारा निर्मित मास्क उपलब्ध करवाये गये और राज्य में मास्क की किल्लत को कम किया गया। राज्य सरकार ने इस महत्त्वपूर्ण कार्य में जीविका दीदियों का सहयोग प्राप्त करने पर बल दिया और इसमें भी जीविका दीदियों ने सफलता प्राप्त की। कठिन परिस्थिति में जीविका दीदियों के प्रयासों से हजारों परिवारों को राशन के लिए एक हजार की सहायता उपलब्ध हुई जिनके पास राशन कार्ड उपलब्ध नहीं था।

इसके अतिरिक्त राशन कार्ड से वंचित लोगों को राशन कार्ड बनाने में भी जीविका दीदियों ने भूमिका निभायी और राज्य सरकार के भरोसे को कायम रखा। उन्होंने नियत समय पर राशन कार्ड से संबंधित सारे कार्यों को पूरा किया। इसी प्रकार सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़े वैसे वंचित परिवारों जो लॉकडाउन की अवधि में आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे थे, उनके बीच ग्राम संगठनों के माध्यम से नकद रूप में इमरजेंसी फंड उपलब्ध करवाया गया। लॉकडाउन की अवधि में यातायात की कमी और बैंकिंग सेवा की अनुपलब्धता के कारण भी आम लोग परेशान हो रहे थे लेकिन इस कठिनाई का समाधान भी जीविका दीदियों ने निकाला और हजारों ग्राहक सेवा केन्द्र (CSC) द्वारा लाखों लोगों को उनके घरों, पंचायतों के नजदीक बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करायी गयी।

जीविका दीदियों के इन प्रयासों के कारण आमलोग कोरोना के प्रति जागरूक हुए एवं उन्होंने विभिन्न उपायों को अपनाते हुए खुद को इसके संक्रमण से बचाया। लॉकडाउन जैसी मुश्किलों के कारण लाखों लोगों के समक्ष भोजन की समस्या भी थी, जिसका समाधान जीविका दीदियों ने अपने प्रयास से किया। दीदियों के प्रयासों से स्थानीय एवं प्रवासियों के बीच रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हुए। लाखों परिवार विभिन्न सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हुए। कोरोना जैसी मुश्किल परिस्थिति में भी दीदियों ने अपने प्रयासों से संघर्ष का रास्ता सफलतापूर्वक तय किया। दीदियों ने हर परिस्थिति में अपनी हिम्मत और हुनर का परिचय दिया। कोरोना संक्रमण के दौरान दीदियों के छोटे–छोटे प्रयास आज एक बड़ा आकार ले चुका है। दीदियों के बारे में इतना ही–

‘ मैं अकेला ही चला था, ज़ानिबे–मंजिल मगर, लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया।’

Mask Production & Supply

Abhijeet Mukherjee, YP-KMC

The Ideation

Amid the announcement of the COVID-19 as a global pandemic and the mandate for compulsory use of masks, a sudden shortage was imminent. As no body had any idea about the sudden need of masks, production was naturally low while demand was understandably high. The rural sector was worst hit due to this crisis because there was less or no supply of masks in the rural areas. JEEViKA took cognizance of the issue and started working on production of masks. It was like capitalizing the skills of the members in the community based organizations, many of whom were already working in stitching units or were having their own stitching businesses.

Process of production

JEEViKA discussed about the shortage of masks with its community based organizations, and took help of the producer groups (PGs) to initiate production of masks. A sanitary napkin production unit in Sheikhpura was also roped in for mask production. Interested members volunteered themselves for mask production and supply. Initially members associated with PGs were involved in production. Members took loans to buy

stitching machines and joined the production to secure livelihoods amid the lockdown. In consultation with the Health department authorities criteria to be fulfilled for mask production pertaining to cloth selection, dimensions, sterilization, packaging and the likes were standardised and maintained and the production started accordingly. Zero contact and non-contamination production is also being maintained.

Impact and Outreach

The production gained significant pace during the three lockdown periods, with just over 10,000 masks produced in the first week (March 2020) the households engaged in mask production gained momentum and a total production of 25 Lakhs masks were produced by the first week of May 2020.

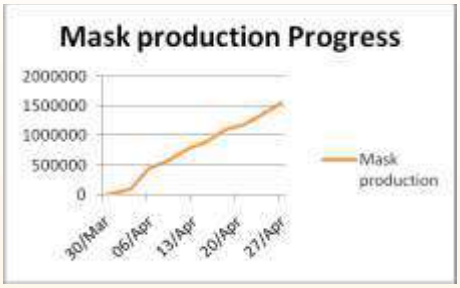

The number of households engaged in the mask production also increased in the lockdown period, Whereas 100 households were engaged in the first week of production (April 2020), by the first week of May 2020, over 2300 households got involved in mask production. Starting in three districts the production was later expanded to all 38 districts of Bihar. Currently with over 29,000 households involved in the manufacturing, the JEEViKA didis have achieved a production of more than 2.3 crores masks and the tally is increasing every day.

The masks produced by the JEEViKA didis are being supplied to various government departments, MGNREGA workers upon order and are also being purchased by JEEViKA's CBOs and officials.

Involvement of Returnee Migrants:

After the onset of the lockdown all over the country, people of Bihar working in other states started returning to Bihar and were faced up with joblessness, JEEViKA helped them in fetching loans and involved them in mask production units set up at the quarantine centers as well as in the villages.

Mask production as a potential source of sustainable livelihood:

Mask production proved itself to be a very vital source of livelihood during the lockdown and helped in sustaining the sudden shock from halting of livelihood activities.

With the COVID-19 pandemic's widespread effects, usage of masks is being seen as a long term solution to contain the spread of the dangerous virus and for potential infection from it. This situation has put forth mask production as a long term source of livelihood with the demand for masks rising day by day. Mask production would surely benefit the JEEViKA didis engaged in the mask production activity as an additional source of income and it would also help in mitigating any shortage of masks. With time various innovative designs have also been created which include hand painted masks, masks with social messages, masks made with Madhubani Paintings and the likes.

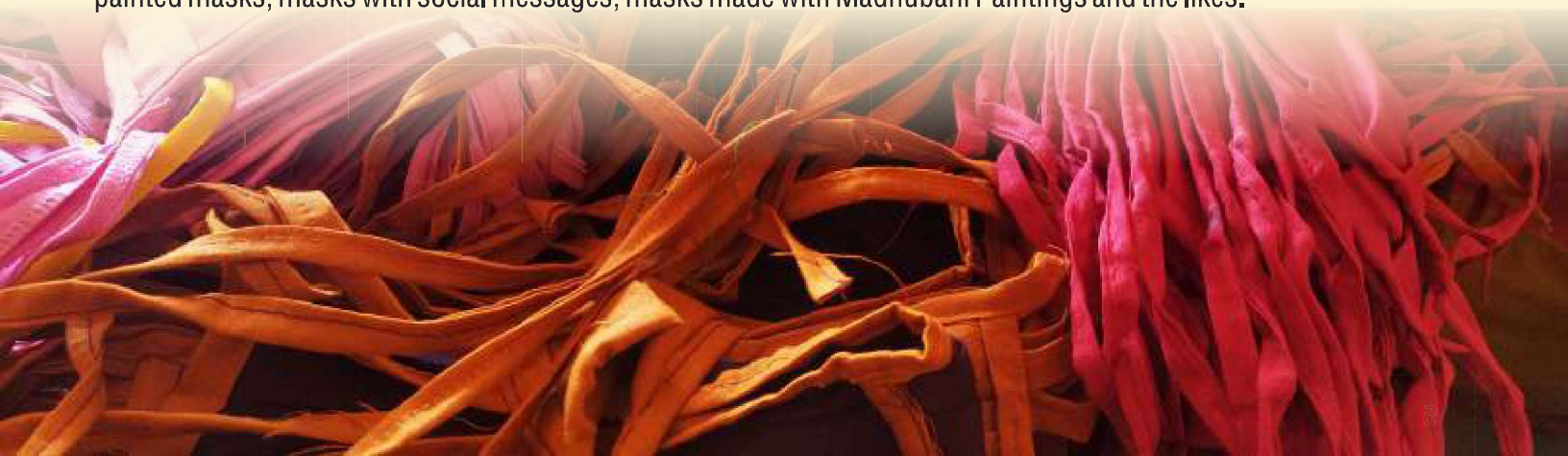

कोरोना काल में बेसहारा हुए अतिनिर्धन परिवारों को जीविका से मिला सहारा

कोरोना वायरस के संक्रमण को समुदाय स्तर पर फैलने से रोकने और लॉकडाउन से उत्पन्न स्थिति का सामना कर रहे गरीब परिवारों को राहत पहुंचाने के मामले में जीविका दीदियों ने निभाई 'वॉरियर्स' की भूमिका

विकास कुमार राव, संचार प्रबंधक, जीविका, सुपौल

वर्ष 2020 में मार्च महीने के द्वितीय पक्ष में वैश्विक महामारी कोरोना (COVID-19) ने भारत में अपना पैर पसारना शुरू कर दिया था। दुनिया भर के सभी देशों में कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण एवं बिगड़ते हालात को देखते हुए भारत सरकार ने सुरक्षात्मक कदम उठाए। अंतरराष्ट्रीय उड़ान सेवाएं बंद कर दी गईं। बैठकों, आयोजनों एवं प्रमुख गतिविधियों पर रोक लगा दी गई। सरकार ने कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए 24 मार्च से 14 अप्रैल तक के लिए देश व्यापी लॉकडाउन घोषित कर दिया। सरकार ने महामारी रोकथाम कानून को लागू करते हुए देश भर में शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थान, सामाजिक एवं व्यवसायिक गतिविधियों, उद्योग–धंधे, यातायात–व्यापार, निर्माण–विनिर्माण और सभी छोटे–बड़े बाजारों को बंद कर दिया । मात्र आवश्यक सेवाओं को ही बरकरार रखा गया था, शेष गतिविधियां प्रतिबंधित थीं। सरकार ने लॉकडाउन को तीन चरणों में 3 जून 2020 तक जारी रखा। इसके बाद धीरे–धीरे अनलॉक की प्रकिया शुरू की गई। हालांकि लॉकडाउन के बावजूद कोरोना वायरस के संक्रमण की रफ्तार को कम नहीं किया जा सका। लॉकडाउन के दौरान आम लोग कोरोना संक्रमण से बचने और लॉकडाउन की वजह से उत्पन्न स्थिति का सामना करने के लिए संघर्ष करती दिखाई दिये।

लॉकडाउन में विभिन्न गतिविधियों एवं काम–धंधों के बंद हो जाने से आम आदमी प्रभावित हुआ है। निर्धन एवं अति निर्धन परिवार के सामने रोजी–रोटी का संकट आ खड़ा हुआ । बिहार के बाहर दूसरे राज्यों में मजदूरी करने वाले परिवारों के सामने भी विकट स्थिति पैदा हो गई । ऐसे हालात में सरकार द्वारा गरीब परिवारों को राहत उपलब्ध कराने के लिए घोषणाएं की गयी। सभी परिवारों को

तत्काल हजार–हजार रुपये अपदा राहत कोष से दिए जाने की घोषणा की गई। सरकार द्वारा घोषित राहत पैकेज को जरूरतमंद तक पहुंचाने एवं समुदाय स्तर पर जागरूकता फैलाने में जीविका दीदियों एवं सामुदायिक संगठनों की अग्रणी भूमिका रही है। कोरोना वायरस के संक्रमण को समुदाय स्तर पर फैलने से रोकने और लॉकडाउन से उत्पन्न स्थिति का सामना कर रहे गरीब परिवारों को राहत पहुंचाने के मामले में जीविका दीदियां 'वॉरियर्स' की भूमिका निभा रही हैं।

पूर्ण लॉकडाउन की अवधि में सामुदायिक संगठनों एवं जीविका दीदियों द्वारा किए गए निम्न कार्य उल्लेखनीय है:–

समुदाय स्तर पर जागरूकता अभियान : कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव हेतु जनसमुदाय स्तर पर कोरोना जैसी महामारी के बारे में सही जानकारियों का प्रसार जरूरी था। ऐसे वक्त में जीविका सामुदायिक संगठनों द्वारा व्यापक पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाये गये। सामाजिक दूरी, कम से कम आवाजाही एवं खुद की सुरक्षा का ख्याल रखते हुए घर–घर जाकर जीविका दीदियों को कोरोना वायरस से बचाव हेतु जागरूक किया गया। कोरोना लिफलेट बांटकर जीविका दीदियों एवं ग्रामीण परिवारों को कोरोना के बारे में सही जानकारी उपलब्ध कराई गई। जागरूकता के प्रसार से मुख्य धारा से छूटे ऐसे परिवारों को संक्रमण से बचाने में बड़ी भूमिका रही।

मास्क एवं सेनिटाइजर के प्रयोग के बारे में सही जानकारी : जीविका दीदियों ने गांव के गरीब एवं अति निर्धन परिवारों को मास्क एवं सेनिटाइजर के प्रयोग के बारे में बताया। मास्क का प्रयोग क्यों जरूरी है और इसका प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए, सेनिटाइजर क्या है और इसके प्रयोग में बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में ग्रामीण परिवारों को बताया गया। जीविका मित्रों ने समूह की दीदियों को साबुन से अच्छी तरह हाथ धोने के तरीके एवं हाथ धोने के बाद साफ कपड़े से हाथों को पोंछने के बाद सेनिटाइजर का प्रयोग करने के बारे में जारकारी उपलब्ध कराई ताकि किसी भी तरह कोरोना वायरस का संक्रमण समुदाय स्तर पर न हो।

मास्क का निर्माण : कोराना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए मास्क का उपयोग जरूरी माना गया है। लेकिन शुरुआती दौर में बिहार जैसे राज्य में पर्याप्त संख्या में मास्क उपलब्ध नहीं थे। ऐसी स्थिति में जीविका दीदियों ने व्यापक पैमाने पर मास्क का उत्पादन कर तत्काल मास्क उपलब्ध कराने में बड़ी भूमिका निभाई। इससे बाजार में मास्क की कीमत में अचानक आई तेजी पर विराम लगा, जिससे आम आदमी विशेषकर गरीब परिवारों के लिए भी मास्क खरीदना संभव हो पाया। इससे सिलाई–कटाई का काम जानने वाले गरीब दीदियों को कोरोना संकट के दौरान रोजगार मिला। मास्क निर्माण से जुड़ी दीदियों के लिए यह एक बड़ी राहत थी, क्योंकि उन्होंने ऐसे दौर में अपने परिवारों के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

गरीब परिवारों के बीच मास्क का वितरण: अतिनिर्धन परिवारों को मुफ्त में मास्क उपलब्ध कराने की शुरुआती पहल जीविका सामुदायिक संगठनों द्वारा की गई। सुपौल के बसंतपुर प्रखंड में पंचमुखी महिला संकुल स्तरीय संघ ने जीविका दीदियों से मास्क तैयार कराकर गांव के अतिनिर्धन परिवारों को मास्क का वितरण किया।

जीविका के सहयोग से जला अतिनिर्धन परिवार घर में चूल्हा: सुपौल के बसंतपुर प्रखंड स्थित कुशहर पंचायत की रहने वाली मसोमात बलिया देवी और उसके तीन बच्चों को लॉकडाउन के शुरुआती दो दिन तक भूखे पेट रहना पड़ा। इस बात की भनक जब शिवानी जीविका महिला ग्राम संगठन की दीदियों को लगी तो ग्राम संगठन ने स्वत: संज्ञान लेते हुए तत्काल पहल की और बलिया देवी को 500 रुपये नकद और 10 किलोग्राम खाद्यान्न उपलब्ध कराया। परिस्थिति को देखते हुए सामुदायिक संगठन आगे आए और उन्हें तत्काल राहत उपलब्ध कराई गई। सामुदायिक संगठनों और जीविका दीदियों ने ऐसे कदम उठाकर मानवीय संवेदना और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभायी। यही कारण है कि गांव की

गरीब दीदियां आज संकट की घड़ी में सबसे पहले जीविका समूहों या ग्राम संगठनों की ओर आशा भरी नजरों से देखती हैं।

खाद्यान्न का वितरण : लॉकडाउन की अवधि में सभी तरह के काम बंद हो जाने से मजदूरी पर आश्रित परिवारों के लिए राशन जुटाना मुश्किल हो गया। काम नहीं मिलने से उनके पास पैसे नहीं थे। ऐसे वक्त में जीविका ग्राम संगठनों ने खाद्य सुरक्षा निधि के तहत चावल, दाल, तेल आदि की खरीदारी कर ग्राम संगठन के सदस्यों को वितरित किया। ये चावल दाल उन्हें बाजार से कम कीमत और उधार दिए गए ताकि उन्हें तत्काल पैसे देने की बाध्यता नहीं रहे।

जन वितरण प्रणाली से छूटे हुए परिवारों का सर्वे : लॉकडाउन से

प्रभावित परिवारों को तत्काल राहत देते हुए राज्य सरकार ने सभी गरीब परिवारों को तीन माह का मुफ्त अनाज उपलब्ध कराने की घोषणा की। इसके लिए प्रत्येक परिवारों को हजार–हजार रुपये दिए जाने थे। बहुत से ऐसे गरीब परिवार थे, जो जन वितरण प्रणाली के लाभ से वंचित थे। ऐसे परिवारों के लिए सर्वे कराने का काम जीविका को दिया गया। जीविका ने कोरोना संक्रमण के खतरों के बावजूद राज्य भर में जन वितरण प्रणाली से छूटे हुए परिवारों के सर्वे का काम संपन्न किया। जीविका द्वारा गरीब एवं सरकार की सहायता हेतु योग्य परिवारों की सहायता हेतु उल्लेखनीय योगदान दिया गया। इस काम में जीविका के तमाम ग्राम संगठन, जीविका दीदियां, जीविका कैडर एवं जीविकाकर्मियों ने पूरे मनोयोग से हिस्सा लिया और इस काम को सफलतापूर्वक सम्पादित किया और पूरे राज्य में गरीब परिवारों को राहत राशि पहुँचायी गयी।

राशन कार्ड तैयार कराने हेतु प्रपत्र तैयार करा कर गरीब परिवारों को जन वितरण प्रणाली से जोड़ना : जन वितरण प्रणाली से छूटे हुए परिवारों का सर्वे कराने को बाद उन्हें तत्काल हजार–हजार रुपये की राहत राशि सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई। ऐसे परिवारों के लिए राशन कार्ड तैयार करवाने के लिए प्रपत्र तैयार कराया जाना था। इसके लिए जीविका से जुड़े परिवारों का प्रपत्र तैयार करवाने एवं उसे आरटीपीएस काउंटर पर जमा कराने की जिम्मेदारी जीविका को दी गई जिसे सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। यह जीविका के सामुदायिक संगठनों की जावाबदेही का प्रमाण है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लाभान्वित परिवारों को दो–दो हजार रुपये की सहायता : सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लाभान्वित अत्यंत निर्धन परिवारों को ग्राम संगठन के माध्यम से कोरोना संकट के दौरान आकस्मिक निधि के रूप में दो–दो हजार रुपये की राशि उपलब्ध करायी गयी। कोरोना संकट के दौरान सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत की जा रही गतिविधियां भी प्रभावित हुई है और योजना के लाभार्थियों को तत्काल राहत उपलब्ध पहुंचाने के लिए एसआईएफ का एक हिस्सा उन्हें ग्राम संगठन के माध्यम उपलब्ध कराया गया।

प्रवासी मजदूरों का समूहों से जुड़ाव : लॉकडाउन की अवधि में बिहार लौटे प्रवासी मजदूर परिवारों की महिलाओं को समूह से जोड़कर उन्हें संगठित किया गया है। जीविका दीदियों ने ऐसे परिवारों को चिन्हित कर उन्हें समूह से जोड़ा और उनके रोजगार सृजन हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

इस प्रकार वित्त वर्ष 2020–21 की पहली तिमाही जहाँ पूरी दुनिया में मानव समाज के लिए संकट का काल रहा वहीं और और जीविका दीदियाँ ग्रामीणों के पक्ष में संघर्ष कर उन्हें राहत पहुँचाने में सफल रहीं।

महिला सशक्तीकरण के मायने ग्राहक सेवा केन्द्र

रौशन कुमार एवं राजीव रंजन, प्रबंधक संचार, बक्सर एवं समस्तीपुर

आज ग्रामीण क्षेत्र में मिशन बैंक पॉलिसी कारगर हो रही है। जहाँ किसी बैंक की कोई शाखा नहीं है, वहाँ जीविका दीदियों द्वारा संचालित ग्राहक सेवा केंद्र ग्रामीणों को बैंकिंग सुबिधा प्रदान कर रहे हैं। प्रतिदिन लाखों रुपये का जमा–निकासी ग्राहक सेवा केंद्र के माध्यम से हो रहा है। बतौर बैंक सखी जीविका दीदियाँ ग्रामीण जीवन को गति प्रदान कर रही हैं और महिला सशक्तीकरण एवं स्वावलंबन का उदाहरण पेश कर रही हैं। कोरोना वायरस संक्रमण के दौर में भी जीविका दीदियाँ ग्राहक सेवा केंद्रों को नियमित तौर पर चलाती रहीं। सुदूर गाँवों में भी लोगों को रुपये के लिए शहर नहीं आना पड़ा और न ही कोई परेशानी उठानी पड़ी।

बिहार के लगभग सभी जिलों में संचालित ग्राहक सेवा केंद्र ग्रामीणों के लिए लाभदायक हो रहा है। ग्रामीण जरूरत और अपने व्यवसाय के हिसाब से रुपये जमा या निकासी करते हैं। साइबर कैफे चलाने वाले ओम बाबु यादव बताते हैं कि ग्राहक सेवा केंद्र इनके लिए काफी लाभदायक है। कभी भी जरुरत के हिसाब से यहाँ से रुपये मिल जाते हैं।

केंद्र सरकार ने स्वयं सहायता समूह की सदस्यों को बैंक सखी के तौर पर काम करने के लिए 'मिशन बैंक सखी पॉलिसी' को मंजूरी दी है। इसके तहत बिहार में जीविका दीदियाँ नियमानुसार चयन प्रक्रिया से गुजरने के बाद चयनित हो बैंक सखी के रूप में ग्राहक सेवा केंद्र का

संचालन कर रही हैं। इसका फायदा ग्रामीण क्षेत्र को लोगों को मिल रहा है। लॉकडाउन के दौर में भी ग्राहक सेवा केंद्र ग्रामीणों के लिए पैसों की जमा– निकासी के साधन बने रहे। श्रीमती राम रति देवी, गृहिणी बताती हैं कि उम्र के अंतिम पड़ाव में जहाँ लॉकडाउन में घर से निकलने की मनाही थी उस समय ग्राहक सेवा केंद्र से जरुरत के अनुसार मैंने रुपये निकाले।

इससे के पहले ग्रामीणों को रुपये की जमा–निकासी के लिए कई किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। लेकिन अब गाँव में ही सुविधा मौजूद है। ग्राहक सेवा केंद्र को संचालित करने वाली जीविका दीदियाँ भी आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त हो रही है। एक ग्राहक सेवा केंद्र पर सौ से ज्यादा खाताओं का संचालन होता है। बक्सर जिले के नैनीजोर गाँव में ग्राहक सेवा केंद्र चलाने वाली जीविक दीदी रिनी कुमारी पूरे बिहार में रुपयों की जमा–निकासी और फिर सबसे ज्यादा कमीशन पाने वालों में अव्वल रही हैं। ग्राहक सेवा केन्द्र की संचालिका प्रतिमाह छः से आठ हजार रुपये कमीशन पाती हैं। जीविका के माध्यम से वे आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त हुई हैं।

पूरे राज्य में जीविका दीदियों द्वारा ग्राहक सेवा केंद्र सफलता पूर्वक संचालित हैं। बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका के सहयोग से संचालित ग्राहक सेवा केंद्र स्थापना एवं उदेश्यों पर खरा उतर रहे हैं। ग्राहक सेवा केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक के समकक्ष सेवा दे रहे हैं और महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण एवं स्वावलंबन में बड़ी भूमिका अदा कर रहे हैं। इससे यह सन्देश भी जा रहा है कि शिक्षित महिलाएँ सफलता की इबारत लिख सकती हैं। जो महिलायें कल तक एक रुपये के लिए पुरूषों पर आश्रित थीं, अब दूसरे जरुरतमंदों के लिए मददगार बन गई हैं। ग्राहक सेवा केंद्र ने ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के माध्यम से मौन क्रांति की है।

क्या है मिशन बैंक सखी पॉलिसी

केंद्र सरकार ने स्वयं सहायता समूह की सदस्यों को बैंक सखी के तौर पर काम करने के लिए वर्ष 2017 में मिशन बैंक सखी पॉलिसी को मंजूरी दी। इसके तहत प्रत्येक पंचायत में एक बैंक सखी रखने का प्रावधान किया गया है। बैंक सखी के लिए स्वयं सहायता समूह का सदस्य होना अनिवार्य शर्त है। दूसरी शर्त है मैट्रिक पास होना। श्री जीवन झा, राज्य परियोजना प्रबंधक, जीविका बताते हैं कि इस क्रम में बिहार में भी जीविका दीदियाँ चयन प्रक्रिया से गुजरने के बाद बतौर बैंक सखी चयनित होकर ग्राहक सेवा केंद्र चला रही हैं। इस कार्य के लिए उन्हें सम्बद्ध स्वयं सहायता समूह, जीविका से ब्याज मुक्त पचास हजार रूपया ऋण दिया जाता है। इस ऋण को उन्हें किस्त के रूप में प्रतिमाह समूह को वापस करना होता है। इसके अलावा उन्हें दस हजार रूपया अनुदान के तहत ग्राहक सेवा केंद्र की आधारभूत संरचना विकसित करने के लिए दिया जाता है। साथ ही सेवा केंद्र खुलने के दिन से अगले छः माह तक पच्चीस सौ रुपये प्रतिमाह का मानदेय दिया जाता है। ग्राहक सेवा केंद्र प्रत्येक पंचायत में खोलते हुए ग्रामीणों को बैंकिग सेवा सहजता एवं सुगमता से उपलब्ध कराना ही उदेश्य है। ग्राहक सेवा केंद्र में खाताधारकों की कोई न्यूनतम या अधिकतम संख्या निर्धारित नहीं की गई है।

Corona Warriors
lending a helping hand!

Khyati Pandey, YP BPM

The nation and the world are facing one of the worstever crises in the form of Novel Corona Virus. A war-like situation is prevailing globally as COVID-19 spread across the borders, Bihar is no exception. In this time of crisis, Jeevika didis came forward to set new milestones for humanity and service to the community. In one of initiatives, Jeevika's Self Help Group members who are engaged in running cafeteria called Didi ki Rasoi at Sadar hospital in Shiekhpura district of Bihar, took no time to decide that they have to continue to run the cafeteria during the 21 day nationwide lockdown. This meant that they, not only had to procure requisite essential commodities in advance, but also had to stay away from their home for next 21 days and would be more prone to the infection . This was a tough call but seven Jeevika Didis decided to provide healthy & hygenic food to doctors, nurses, patients and other hospital staff during the period of crisis.

Jeevika Didis of "Gyaan Darshan Jeevika Didi ki Rasoi" very well knew that if they do not take requisite preventive measures, they will end up doing more disservice than service to the hospital staff. So, they decided to sanitize their kitchen on daily basis and wear masks, gloves, aprons and hair cover & abide by social distancing norms. Besides, Jeevika didis were cautious enough to wash their hands every hour and before and after giving their services.

A roster and menu chart was prepared keeping in mind the availability of raw material and the labour required for cooking and cleaning service. It was ensured that there should not be more than 3 persons in one shift and the work should not get overburdened on one or two persons.

As Sadar hospital is located at same distance from their respective houses and pubic transports were unavailable because of lockdown, our didis went on giving 24*7 services in different shifts. Also, being aware of the current situation of the market, didis decided to have stock of non-perishable ration so that the patients, doctors and other hospital staff get timely service and not face any crisis. Jeevika didis working at Didi ki rasoi are aware of the current status of COVID-19 , hence they are comforting the patients while serving food and instead of getting frightened they are dedicatedly doing their best to fight back.

Jeevika's Corona Warriors Mouthpiece...

"मुझे लगा अगर हमलोग चले गये तो डॉक्टर, मरीज़ और मरीज़ क साथ आये लोग कहाँ खाना खायेंगे ?!

Who would feed the doctors, patients and caretakers ofpatients if we leave the hospital?! – Sanju Devi

''अगर डाक्टर साहब लोग अपनी जान ख़तरे में डालकर दिन–रात लोगों की मदद कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते ?!''

If doctors can help people without thinking about their lives then why cant we do that ?! - Savitri Devi

दीदी की कहानी दीदी की जुबानी

केस–1 सतत् जीविकोपार्जन योजना

दो दिन से भूखे बलिया देवी के परिवार के घर जीविका की मदद से जला चूल्हा

सुपौल में बसंतपुर प्रखंड की रहने वाली बलिया देवी और उसके तीन बच्चे पिछले दो दिनों से भूखे थे। उनके घर में एक मुट्ठी भी अनाज नहीं था। बलिया किसी के घर अनाज मांगने जा भी नहीं सकती थी। वह तो कोई काम ढूँढ रही थी, ताकि काम के बदले मिलने वाले पैसे या अनाज से वह अपने परिवार का पेट भर सके। लेकिन कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए सरकार द्वारा घोषित लॉकडाउन की वजह से सारे काम–धंधे बंद हैं। बलिया देवी इस वक्त दूसरे के घरों में काम मांगने भी नहीं जा सकती है क्योंकि कोरोना की डर से लोगों ने एक–दूसरे से मिलना–जुलना या अपने घर में किसी के आने–जाने से मना कर दिया है। ऐसे बुरे हालात में बलिया देवी के पास कोई काम नहीं है। ऐसी स्थिति में

नाम : बलिया देवी
समूह : माता जीविका स्वयं सहायता समूह
प्रखण्ड : बसंतपुर,
जिला : सुपौल

बलिया देवी और उसके तीन बच्चों को भूखा रहने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं था। लेकिन बच्चों को भूखा तड़पता देख बलिया देवी की आत्मा कांप उठी। तब बलिया ने गांव में किसी व्यक्ति से मदद मांगने के बजाय जीविका के स्वयं सहायता समूह से सहायता लेना उचित समझा। उसने अपने समूह– माता जीविका स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष दीदी एवं जीविका के प्रखंड परियोजना प्रबंधक को अपने हालात के बारे में बताया। समूह की दीदी ने बलिया देवी के स्थिति से अवगत होने के बाद इस पर तुरंत संज्ञान लेते हुए उसे 500 रुपये नकद और 5 किलोग्राम चावल उपलब्ध कराया ताकि बलिया देवी और उसके तीन बच्चे अपना पेट भर सकें।

दरअसल बलिया देवी के पति की तीन साल पहले ही बीमारी की वजह से मौत हो गई थी। पति की मौत के बाद तीन छोटे बच्चों की परवरिश का भार बलिया देवी पर आ गया। पहले पति की मजदूरी से घर का गुजारा चलता था।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ाव : पति की मौत के बाद बलिया देवी के परिवार की स्थिति काफी दयनीय हो गई। उसकी दयनीय स्थिति को देखते हुए शिवानी जीविका महिला ग्राम संगठन ने बलिया देवी का नाम सतत् जीविकोपार्जन योजना के लिए चिन्हित किया। बसंतपुर प्रखंड में अभी दो–तीन माह पहले ही इस योजना की शुरुआत की गई है और पहले ही दौर में ग्राम संगठन द्वारा बलिया देवी को इस योजना हेतु उपयुक्त मानते हुए योजना का लाभ दिलाने की पहल की गई है।

केस-2 **संकट मोचन बने ग्राहक सेवा केंद्र**

लॉक डाउन में संकट मोचन बने ग्राहक सेवा केंद्र संचालक

कोविड–19 (कोरोना वायरस) की महामारी के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए पूरे देश में लॉकडाउन लागू किया गया और सिर्फ जरूरी सेवाएं जैसे ग्रॉसरी स्टोर, दूध, सब्जी, फल और दवाई की दुकानें और बैंकों को ही खोलने का आदेश जारी किया गया। लोगों के मन में इस लाइलाज बीमारी को लेकर काफी डर भी है जिसके कारण लोग केवल बहुत जरुरत पड़ने पर ही अपने घर से बाहर निकल रहें है। इस समय सार्वजनिक परिवहन सेवा बंद है। ऐसे में लोगों को पैसे की जरुरत पड़ने पर समस्या और बढ़ जाती है क्योंकि पैसे या किसी बैंक संबंधित कार्यों के लिए उन्हें बाजार जाना होता है। ऐसे समय में पूर्णियाँ जिला के बायसी प्रखंड अंतर्गत चोपड़ा पंचायत के रहुआ गाँव की बैंक सखी प्रियंका कुमारी द्वारा संचालित ग्राहक सेवा केंद्र, आस – पास के गाँव में निवास करने वाले लोगों के लिए वरदान साबित हो रहा है।

प्रियंका कुमारी, जीविका संपोषित आँचल नारी शक्ति महिला स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड के रौनक जीविका महिला ग्राम संगठन के सहयोग से बैंक सखी के रूप में 24 जनवरी 2020 से केनरा बैंक के ग्राहक सेवा केंद्र को अपनी पंचायत के नजदीकी बाजार सिमलबारी में संचालित कर रही थी । लॉक डाउन के कारण गाँव से बाजार आने –जाने में लोगों को काफी परेशानी हो रही थी और जीविका समूह की दीदियाँ पैसे की जरुरत पड़ने पर निकासी के लिए प्रियंका के घर पहुँचने लगीं।

गाँव के लोगों, खासकर जीविका दीदियों की जरूरत को देखते हुए प्रियंका 5 अप्रैल 2020 से अपने गाँव रहुआ में अपने आवास से ही ग्राहक सेवा केंद्र संचालित कर रही हैं। प्रियंका को प्रारंभ में मन में इस बीमारी का डर लगा हुआ रहता था पर जीविका एवं विभिन्न माध्यमों से चलाए गए जागरूकता अभियानों से ना केवल उनका हौसला बढ़ा बल्कि उनमें जागृति भी आयी है। वह ग्राहक सेवा केंद्र में आने वाले सभी लोगों को 'कोरोना वायरस' से बचाव को लेकर जागरूक करते हुए सोशल डिस्टेंसिंग के साथ–साथ साबुन से हाथ धोकर, मास्क पहनकर एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करवाते हुए लेन–देन का कार्य कर रही हैं।

इस समय प्रियंका के घर पर प्रतिदिन लगभग 40 लोग आकर पैसे की निकासी करते हैं जिनमें अधिकतर महिलाएं होती हैं तथा मुख्य रूप से सरकारी योजनाओं के तहत आये हुए पैसे की निकासी या जमा करती हैं। आम तौर पर पैसे निकालने वाली दीदी आस–पास के गाँव की होती हैं, जिन्हें पैसे की अत्यंत आवश्यकता होती है। लॉक डाउन के दिन से लेकर 20 अप्रैल 2020 तक आस–पास के सौ से अधिक लोगों द्वारा इस ग्राहक केंद्र से 15,11,795 रुपए जमा/निकासी की गयी है। प्रियंका प्रतिदिन केनरा बैंक के सिमलबारी शाखा से जा कर 50 हजार रुपए से 1 लाख रुपए के बीच नगद लाती हैं जो दिन भर के अंदर खत्म हो जाता है।

रहुआ गाँव की मीना देवी एवं शाहजाहा खातून का कहना है कि "इस परिस्थिति में गाँव में ग्राहक सेवा केंद्र होने से न केवल हमें केवल आसानी से नगद रुपए मिल रहा है बल्कि समय और पैसे की भी बचत हो रही है। यह ग्राहक सेवा केंद्र वहाँ के लोगों के लिए एक वरदान साबित हुआ है जिसके लिए वे प्रियंका कुमारी (ग्राहक सेवा केंद्र संचालिका) और जीविका को धन्यवाद भी देती हैं।

केस–3 अपने हूनर का इस्तेमाल

अगरबत्ती के व्यवसाय से महकी अनिला की जिन्दगी

समस्तीपुर जिले के विभूतिपुर प्रखंड अन्तर्गत पतौलिया, वार्ड–04 की निवासी अनिला देवी का जीवन अगरबत्ती के व्यवसाय के चलते बदल गया है। अनिला कौशल्या जीविका स्वयं सहायता समूह एवं किशन जीविका महिला ग्राम संगठन से जुड़ी हैं। अनिला के पति राजकुमार चौरसिया रोजगार की तलाश में परदेश पलायन कर चुके थे। कोरोना संक्रमण का असर अनिला के परिवार पर भी पड़ा। एक संयोग रहा कि उनके पति जो परदेश में थे, लॉक डाउन के कारण वापस अपने गांव आ गए। अनिला कहती हैं कि पति के गांव लौटने पर मुझे काफी खुशी हुई लेकिन मन में यह बात भी कचोट रही थी कि अब आगे क्या होगा? स्थानीय स्तर पर रोजगार की संभावनाएं नहीं दिख रही थी। इसी बीच पति के साथ चर्चा के दौरान यह जानकारी मिली कि परदेश में रहने के दौरान उन्होंने अगरबत्ती बनाने का काम सीख लिया। अब अनिला और उनके पति ने अगरबत्ती बनाने और बेचने का काम शुरू करने का मन बनाया। अनिला आगे कहती हैं कि इस काम को प्रारंभ करने में कुछ पूंजी की आवश्यकता थी। मैंने यह समस्या समूह की दीदियों को बतायी। आखिर मुझे जीविका से 20 हजार रूपया ऋण के रूप में प्राप्त हो गया। इन पैसों और कुछ खुद के पैसों को मिलाकर मैं और मेरे पति ने अगरबत्ती बनाने का काम आरंभ किया।

नाम– श्रीमती अनिला देवी
समूह– कौशल्या जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन– किशन जीविका महिला ग्राम संगठन
पता–पतैलिया, वार्ड–04, प्रखंड– विभूतिपुर,
जिला–समस्तीपुर

अनिला के पति राजकुमार चौरसिया कहते हैं कि लॉक डाउन के कारण मुझे गांव लौटना पड़ा, जहां मुझपर अपने परिवार के चलाने की जिम्मेदारी थी। तब मैंने अगरबत्ती बनाने के अपने हूनर का इस्तेमाल किया। पूंजी की समस्या का समाधान पत्नी ने जीविका से ऋण लेकर पूरा किया। उन्होंने कहा कि उनके काम में उनकी पत्नी और उनका पुत्र सहयोग प्रदान करते हैं। राजकुमार बताते हैं कि प्रतिदिन उनके परिवार द्वारा लगभग 2 हजार पैकेट तैयार किया जाता है। उन्होंने बताया कि अगरबत्ती बनाने

का सभी कच्चा माल जैसे स्टीक, इत्र, तेल, पाउच आदि बाजार से लाते हैं। अगरबत्ती को तैयार कर उसे बाजार में आसानी से बेच देते हैं। अनिला और राजकुमार बताते हैं कि उनका यह काम काफी बढ़िया चल रहा है और प्रतिदिन औसतन 500 रूपया की आमदनी हो जाती है। उनका कहना है कि अगर उनका व्यवसाय इसी प्रकार चलता रहे तो उनकी आमदनी में और भी वृ) होगी।

केस–4 कोरोना योद्धा : धनावती देवी

स्वस्थ एवं खुशहाल रहे हमारा समाज

देश में लॉकडाउन है, आम से लेकर खास तक घरों में कैद हैं। इन सबके बीच ऐसे भी लोग हैं जो कोरोना वायरस के संक्रमण से देश और समाज को बचाने के लिए घर से बाहर हैं। डॉक्टर, नर्स, पुलिस,सफाई कर्मी और सामाजिक कार्यकर्ता अपनी परवाह किये बिना सुबह से शाम तक कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव हेतु क्रियाशील हैं। बिहार में कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव हेतु हजारों जीविका दीदियाँ लोगों को जागरूक कर रही हैं। जीविका दीदियाँ अपने हुनर और तरीके से अपने गाँव–समाज को कोरोना के संक्रमण से बचाने के लिए अभियान चला रही हैं। उन्ही जीविका दीदियों में से एक है धनावती देवी। धनावती देवी बक्सर जिले के डुमरावँ प्रखंड के सरौडा गाँव की रहने वाली हैं। वे पिछले तीन साल से लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह से जुडी हुई हैं। वर्तमान में धनावती बतौर एम. आर.पी (मास्टर रिसोर्स पर्सन) कार्यरत हैं। धनावती लॉकडाउन के पहले से ही घर–घर जाकर ग्रामीणों को कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव हेतु जागरूक कर रही हैं। इस कार्य में उनके पति, श्री मनोज कुमार सिंह भी सहयोग कर रहे हैं। धनावती अपने साथ 6 सामुदायिक पोषण संसाधन सेवी को साथ लेकर अलग–अलग 6 पंचायतों में कोरोना वायरस से बचने के गुर लोगों को समझा रही हैं। जीविका द्वारा प्रदत लीफलेट के माध्यम से वे 6 पंचायतों के जीविका से संब) स्वयं सहायता समूहों की बैठक आयोजित कर महिलाओं को घर से बाहर नहीं निकलने, निर्धारित अन्तराल पर हाथ धोने, लोगों से दूरी बनाकर रखने, मास्क या गमछे से मुँह– नाक ढ़ककर रखने तथा गर्म पानी पीने जैसे महत्वपूर्ण कार्यों को समझा रही हैं। इसके अतिरिक्त बाहर से आये लोगों की काउंसिलिंग भी कर रही हैं। वे ग्रामीणों से उनके स्वास्थ्य को लेकर प्रतिदिन जानकारी लेती हैं। श्री इन्द्रराज आनंद , प्रखंड परियोजना प्रबंधक, डुमरावँ बताते हैं कि धनावती ने कोरोना के खिलाफ एक अभियान चला रखा है । प्रखंड के 6 पंचायतों में 16 मार्च से ही धनावती लोगों को जागरूक कर रही है। श्री मंजीत प्रसाद, प्रबंधक, स्वास्थ्य एवं पोषण बताते हैं कि ग्रेजुएट धनावती का मास्टर रिसोर्स पर्सन पद पर समुदाय द्वारा चयन उनके द्वारा समूह के माध्यम से किये गए विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता एवं जन जागरूकता अभियानों में उनकी सक्रियता को देखते हुए किया गया और वे समुदाय की उम्मीदों पर खरी उतरी है। पिछले एक साल से धनावती बतौर एम.आर.पी (मास्टर रिसोर्स पर्सन) स्वास्थ्य एवं पोषण विधा में चयनित होकर स्वास्थ्य एवं पोषण तथा स्वच्छता के विभिन्न अवयवों को लेकर महिलाओं एवं किशोरियों को जागरूक कर रही हैं। इसके अपेक्षित परिणाम भी मिल रहे हैं। इनके कार्य क्षेत्र में अब महिलाओं को प्रसव में तथा किशोरियों को स्वास्थ्य एवं पोषण विषयक समस्या नहीं होती। गाँव की महिलायें और किशोरियां इनसे सलाहलेती हैं। धनावती बताती है कि एक महिला होने के नाते मैं महिलाओं के दर्द, उनकी जरुरतों और उनके जज्बात को समझती हूँ। मेरी पूरी कोशिश रहती हैं कि जहाँ भी अज्ञान हो वहां ज्ञान का प्रकाश लाया जाय। ताकि हमारा समाज स्वस्थ एवं खुशहाल रहे। वे बताती हैं कि जीविका द्वारा प्रदत प्रशिक्षणों का परिणाम ही रहा कि वे संकट की इस घड़ी में लोगो को स्वास्थ्य एवं कोरोना वायरस से बचाव के लिए कार्य कर पा रही हैं। कोरोनावायरस के संक्रमण से बचाव हेतु चलाये जा रहे अभियान को लेकर धनावती बताती हैं कि गाँव के लोगों को घर से बाहर निकलने से रोकना मुश्किल कार्य है। किसी न किसी बहाने लोग घर से बाहर आ ही जाते हैं। लेकिन एक महिला द्वारा समझाए जाने पर लोग समझने लगे। इसी बीच जनता कर्फ्यु और सरकार तथा प्रशासन द्वारा दिए निर्देशों ने मेरा काम आसान कर दिया। हम सभी ने मिलकर कोरोना के खिलाफ लड़ाई लड़ी और लोग घरों में कैद होने लगे। हमने सभी से कह दिया है कि यह एक ऐसी लड़ाई है जो घर के अन्दर रहकर लड़नी है और प्रथम दौर में हम जीत रहे हैं। सामाजिक कुरीतियों और ऐसे संकट की घडी में हमरा संघर्ष जारी रहेगा। बहरहाल धनावती कोरोना के खिलाफ लड़ाई में एक सैनिक की तरह कार्य कर रही हैं।

नाम– श्रीमती धनावती देवी
समूह – लक्ष्मी, ग्राम संगठन .– जवाहिरी
पद – एम.आर.पी.
ग्राम– सरौडा, प्रखंड– डुमराव,
जिला– बक्सर

Other Measures for Vulnerability Reduction

Abhijeet Mukherjee, YP-KMC

The country wide lockdown was both important and necessary to battle against the spread of the deadly covid-19 virus, but the lockdown had its own repercussions. With limited livelihoods options, the people from marginalized sections of the rural areas were facing unprecedented crisis. There was an imminent shortage of income as well as food-grains and it became important to mitigate this situation and help the ones in crisis.

The best way to intervene in this situation was to introduce dynamic measures for vulnerability reduction, JEEViKA took some key steps to help the ones in need of urgent help and care. The various measures introduced by JEEViKA for vulnerability reduction are as follows:

Food security through universal coverage:

Seeing the plight of the villagers, Jeevika didi's conducted meetings in their respective institutions to find a feasible solution. The idea that sprung up resonated the basis of a true self-help. Through Food Security Fund, a conventional fund of the project to ensure availability of foodgrains to the food insecure households. This fund could be availed by the Vos having 40% SC-ST households. However during Covid-19 crisis, the FSF was universalised on request of the community. In order to abide by the norms of social distancing, women prepared packets of food grains to be distributed. It has been recorded that a total of 18,000 VOs distributed food grains through FSF fund to more than 21 Lakh households across Bihar.

The women managed distribution of foodgrains with utmost care and perfection. In this time of crisis where everyone is realising the concept of “we” over 'Me”, food distribution initiative of Jeevika didis ensured a sense of belongingness among the community members. This move has not only helped needy families to survive and stand against COVID - 19 but also has imbibed a better and stronger emotional connect in the village.

Extended Moratorium Period for loans and advances

To reduce the financial distress of the community members during this time of crisis, a moratorium of three months has been given against all outstanding loans taken against Revolving Fund, Initial Capitalization Fund or General Loan component from the self-help groups. The payments due in March/April could now be repaid till June 2020 as per office order no. BRLPS/Proj-FI/497/14/Vol-VI/5257 dtd. 31.3.2020

The extended moratorium has helped the members settle their primary needs from the savings they have and have given them an option to pay the dues later when the situation improves and income generation activities are restored to a normal state

Health Risk Mitigation

Health Risk Fund (HRF) was introduced as a soft loan for members to borrow at lower interest rates for health-related emergencies. Emphasis have been given to extend HRF to all eligible Village Organizations to meet the health requirements in distressing times. Further, no interest would be applicable to the loans taken against the HRF component for the period of March 2020 to September 2020 as per office order no. BRLPS/ProjFI/497/14/Vol-VI/5257 dtd. 31.3.2020. An investment of INR 150 Crore has been envisaged for health risk mitigation.

Safety Net for the Ultra-Poor

In times of the lockdown, the ultra-poor families have been worst hit by the crisis. The menial jobs are on the brink of closure and the businesses cannot be operated, to battle the crisis. Satat Jeevikoparjan Yojana (SJY) is a Govt. of Bihar initiative being implemented by JEEViKA since 2018 to uplift the ultra-poor households through a graduation approach. JEEViKA has used the platform of SJY to make sure that no one sleeps with empty stomach. In view of the on-going lockdown, to ensure food security at household level, one time cash grant of Rs. 2000/- has been decided to be given to all households endorsed under SJY through the concerned village organizations.

The policy was approved on 28th Mar, 2020. On the basis of fund availability in the VOs, the village organizations are prioritizing among SJY households and doing the identification work. Cash has been transferred to 38,764* households. The outreach would further increase and it would be ensured that the identified households receive the due grant in time.

Way forward:

These measures for vulnerability reduction have resulted in better resilience of our members and the community at large. The members have been able to properly spend on their priorities as well as to derive benefits that are most needed in the current situation. These steps will ensure sustainability for the members and will better equip them to mitigate the shocks.

Ensuring supply of essential goods

Abhijeet Mukherjee, Sujata Rani, YP-KMC

COVID-19 pandemic took a toll on living of the mankind, abruptly sweeping away livelihood opportunities, exposing the rural poor to more vulnerable situations. The situation worsened after the imposition of nation-wide lockdown and daily wage earners lost all means to keep their families together and meet their basic needs. During this time of crisis, those living in the lowest strata of the societal ladder were barely left with food grains and the means to purchase them.

JEEViKA didis took up the stride against odds to help the community. Their motto of "we are there for you", helped the rural poor of Bihar sustain through the worst days of pandemic and economic crisis. Jeevika didis in Bihar have been playing a critical role to mitigate the crisis brought in by the lockdown and the pandemic. They have been functioning as an effective helping hand to the marginalised and the ultra poor segments of the community, reaching out to them and mitigating measures. Under various initiatives undertaken by the central and the state governments to combat the pandemic crisis JEEViKA didis in Bihar have ensured that no one faces shortage of food.

JEEViKA didis have been operating Rural Retail Markets, locally known as Rural Retail Shops. Supply of groceries

has been enlisted as an essential service and was daily maintained in these shops. These shops serve as a single sale point directly to the rural consumers in small quantities. Adhering to the norms of the Government JEEViKA didis have ensured supply of essential goods by keeping these Rural Retail Shops operational during the lockdown. Precautionary measure of social distancing was practised by the owners of the shops. Circles were made at intervals for the customers to maintain social distance and prevent the spread of the disease. Sanitization of vendors and customers was also done regularly. They also ensured that customers did not touch the goods and themselves made it handy for them, packed and sold in carry bags.

Jeevika's Rural Retail Shops have their presence in rural Bihar 21 such shops have been established across the state. They have ensured that people did not panic and moved to urban areas for essential goods. Through dedicated service and adequate quality maintenance, they have ensured servicing the community at the time of crisis and in return, the customers have shown their loyalty towards these Rural Retail Shops.

This initiative by our community is heart warming, they themselves exposed themselves to the vulnerabilities of the period and extended support to their community. JEEViKA has empowered its women to the extent that they joined hands at such time of crisis. JEEViKA's women have been playing a frontline role during COVID-19.

The quality of goods and their variety has ensured that customers keep turning in. The Rural Retail Shops (RRSs) till date have realized sale worth INR 1.28* Crore through 21 RRSs located in 10 districts. More than 900 grocery stores & 2400 individual HHs get benefited directly. Supply of food grains to the needy ones through Food Security Fund procurement is also being taken care of by these shops which supported over 20 village organizations under food security fund. The Rural Retail shops have helped JEEViKA in reaching out to 35000 households through their services.

Capitalizing on Custom Hiring Centers and Producer Companies for crop management and steady flow of supplies

Abhijeet Mukherjee, YP-KMC

Custom hiring centers of JEEViKA have been established to provide mechanized agricultural services on hiring basis to farmers who cannot afford to buy costly agriculture equipment. The custom hiring centers are operated by JEEViKA's cluster level federations and by nodal VOs in places where a cluster level federation is not functional. The CHCs have elicited mechanized farming in the areas where they have been established.

The harvesting of the standing crops (Wheat, gram, mustard of Rabi Season) was getting delayed due to non-availability of workers and agricultural laborers due to lockdown. The Custom Hiring Centers and Village tool banks promoted by JEEViKA came to the rescue of the farmers in varied manners. Harvesting and post harvesting equipment assisted farmers to tide over this crisis. The equipments are being put to judicious and optimal utilization. Rotavators, harvesters, brush cutters, reaper binders, threshers and the likes have been procured for the purpose.

Currently 110 Custom Hiring Centers are operational in Bihar and are extending various services and lending tools to the farmers at affordable rates amid the crisis of labourers. More than 500 households have been benefited from these hiring centers.

Steady flow of supplies through Producer Companies:

The supply chain logistics were also hit badly and as such, there had to be some local intervention for the same, JEEViKA's farm producer companies that mostly deal in wholesale trade, opened retail platforms to ensure selling of vegetables, they also supported JEEViKA didis who started vegetable business during the lockdown.

Innovative measures such as retail stores, carts for door-to-door selling, kiosks at haats were introduced during the lockdown to ensure that people may get vegetables and other necessities at fair and competitive price. The producer companies sold vegetables to the tune of 20 lakh during the lockdown.

Vegetable businesses helped the members shift to an alternative source of livelihood too, as many of the livelihood options came to a halt, while vegetable business which were listed as essential services could be operated without hassle and disruption. These vegetable businesses could earn good profits and help sustain the families of the sellers.

The response in SOCIAL MEDIA

Abhijeet Mukherjee, Sujata Rani, YP-KMC

As the pandemic swept across the globe, people started turning in huge numbers to digital channels and social media for entertainment, information, education about the activities across the world. During this time of crisis, social media played a pivotal role in mobilizing adequate information critically supporting government, people and enterprises in such critical time. The bonding of Jeevika with the community was elicited through social posts which attracted development professionals from all spheres to land the initiatives.

JEEViKA skilfully spun the live activities into content to share the dexterous initiatives of the community. JEEViKA has captured and narrated the activities performed by JEEViKAdidis and other functionaries. All their efforts, whether related to creating awareness, maintain social distance, use and production of masks, vegetable vending, grain food cultivation using implements provided by the CHC and village tool bank, community kitchen, didikirasoi and operation of CSP's were posted on social media. Through mass media

JEEViKA took the responsibility to tell the world about the community's efforts to combat the socio-economic crisis. Facebook, Twitter and YouTube have been the means of leveraging support to the efforts to the community. Jeevika has been trying its best to efficiently share factual and recent activities. In a way, COVID-19 outbreak came up as an opportunity and Jeevika showed community's efforts to the world and nation and participated in trending popular and related hashtags on social media. The community has been a helpful resource for social media pages and handles.

This is the first time, a generation has experienced a pandemic of this scale, and Jeevika has understood social media's ultimate role. In the coming days, the responses received on public platform would help improve at all levels.

JEEViKA's social media response in numbers

The activities of BRLPS-JEEViKAwere shared profusely in its social media platforms namely twitter, facebook, instagram and the likes. More than 150 posts pertaining to JEEViKA's interventions in the COVID-19 lockdown were made.

Increase in number of followers on twitter during the lockdown and post lockdown:

There has been a steady increase in number of followers during the pandemic as more people got interested in JEEViKA's Covid-19 response and the number of followers doubled in the past 4 months

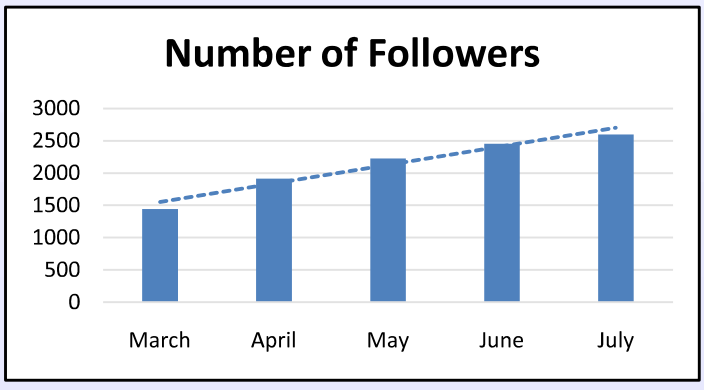

Total impressions registered on twitter:

Impressions denote the number of timesa tweet has been seen. This includes not only the times it appears in one of the followers' timeline but also the times it has appeared in search or as a result of someone liking the Tweet.

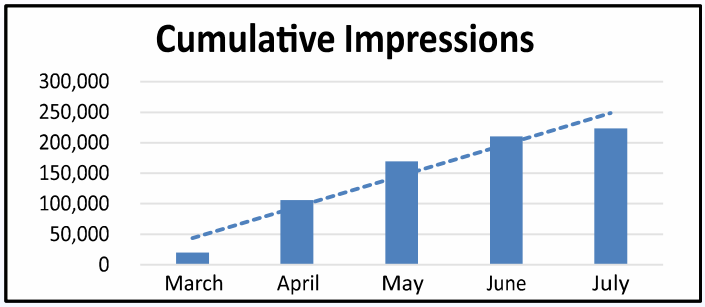

JEEViKA's facebook page also engaged 5000 people on a daily basis and received 500 new followers with an organic reach.

बड़की दीदी

कोरोना संक्रमण की जानकारी

बड़की दीदी बाजार से लौटते हुए घबराए कुछ लोगों को बातें करते देखीं, तो रुक गईं-

अरे, तुम लोग इतने परेशान क्यूँ हो?

बड़की दीदी, हमने उड़ती-उड़ती खबर सुनी है कि कोई भयंकर बीमारी फैली है और हम सब मरने वाले है।

हां! लेकिन आधी-अधूरी जानकारी है तुमलोगों के पास।

बड़की दीदी, आप ही बताइए कि क्या बात है और इन सबमें कितनी सच्चाई है!?

ठीक है, घबराओ मत...सबसे पहले एक काम करो, यहाँ इतनी भीड़ इकट्ठा मत करो और सभी बूढ़े-बच्चे अपने-अपने घर चले जाएँ। बाकी हर घर से एक-एक जिम्मेदार व्यक्ति थोड़ी देर में मुझसे गाँव के चौपाल में मिलो!

और फिर चौपाल में बड़की दीदी के कहने पर सभी लोग एक-दूसरे से 3-3 फीट की दूरी बनाकर बैठ जाते हैं।

तो ध्यान से मेरी बात सुनो। पूरे विश्व में कोरोना वाइरस नाम की एक संक्रामक बीमारी फैल रही है। यह जानलेवा बीमारी बहुत तेजी से अपने पैर पसार रही है।

हे भगवान! क्या हम सब मर जाएँगे?

सभी लोग घबरा जाते हैं।

बड़की दीदी, आप ही तो कह रही हैं कि ये जानलेवा बीमारी है और तेजी से फैल रही है, फिर घबराने वाली ही बात हुई ना।

अरे घबराओ मत, पहले अच्छी तरह से मेरी बातों को सुन लो।

ध्यान रखना कि 14 दिनों तक घर का कोई भी सदस्य उसके करीब ना जाए और भोजन के लिए उसकी थाली बिलकुल अलग हो, जिसका इस्तेमाल सिर्फ वो करे। अगर उसके साथ बात करने की जरूरत हो, तो 3 फीट की दूरी रखी जाए।
हे राम! 14 दिनों तक ऐसा करना होगा, लेकिन ऐसा क्यों दीदी?
वो इसलिए गीता, क्योंकि कोरोना के लक्षण दिखने में 14 दिनों का समय लग सकता है। इसलिए 14 दिनों तक बाहर से आने वाले लोगों को अलग रखना सही होगा।
यदि इन 14 दिनों में कोई लक्षण दिखाई दे, तो तुरंत नजदीक के स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाना चाहिए अथवा 104 नम्बर पर फोन करके सूचना देनी चाहिए और यदि ऐसा कोई लक्षण ना दिखे तो फिर कोई बात नहीं।
ओर हां! सबलोग ध्यान से मेरी बात सुनो! जैसा कि मैंने बताया ये बीमारी रोगी के सम्पर्क में आने से फैलती है।
इसलिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि हम एक-दूसरे से कम-से-कम 3 फीट की दूरी बना कर रखें।
सामान्यतः किसी को देख कर समझ में नहीं आता कि ये संक्रमित है या नहीं, इसलिए हर किसी से यह दूरी बनाकर रखनी जरूरी है।
ओहो, अब समझी कि आपने हम लोगों को यहाँ दूर-दूर क्यूँ बैठाया है!
हाँ माला, अब तुम्हें समझ में आया, इस दूरी का मतलब।
वाह दीदी, आप ने तो हमें बिना बताए ही उपाय भी शुरू कर दिया। मान गए आपको!

मन की कलम से

इस उपवन में फूल खिलेंगे

जीवन का अभियान सतत यूँ ही चलता रहता है।
बीता जाता जो पल, हर पल हमसे यह कहता है।

उपवन में पतझड़ वसन्त, दोनों आते रहते हैं।
बीत रहे जो मौसम प्रतिपल हमसे कुछ कहते हैं।

फूल बिछे मिलते हैं, हमको प्रायः जिन राहों में।
काँटो से हो जाता तन, रक्ताक्त उन्हीं राहों में।

दिवा–निशा का चक्र निरन्तर, संध्या कभी प्रभात।
प्रबल ग्रीष्म के बाद धरा पर आती है बरसात।

मानवता का प्रबल शोक बन महारोग आया है।
प्रलय मचाता आया, इससे जन–जन भरमाया है।

मौसम बदलेगा अवश्य यदि कुछ दिन धैर्य धरें हम।
जैसे अब तक किया और थोड़े दिन कष्ट करें हम।

जैसे इतने दिन बीते, ये दिन भी कट जाएँगे।
नभ में छाए दुर्दिन के ये बादल छँट जाएँगे।

हम सींचते रहेंगे– इस उपवन में फूल खिलेंगे।
गले मिलेंगे हम जीवन में अच्छे दिन आएँगे।

शत्रु प्रबल है, किन्तु हमारा धैर्य पड़ेगा भारी।
होगा रोग पराजित हमसे, होगी जीत हमारी।

नर की जय का शंख सतत गूँजेगा समरांगण में।
मानवता का विजय केतु फहरेगा नील गगन में ।

ब्रज किशोर पाठक
विशेष कार्य पदाधिकारी

रचना आमंत्रण

जीविका द्वारा **''चेंज मेकर्स''** (द्विभाषीय – त्रैमासिक) पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका में जीविका से जुड़ी गतिविधियों / कार्यक्रमों / सफलता की कहानियों के प्रकाशन के साथ–साथ विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे जीविका कर्मियों के अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है। जीविका कर्मियों से आग्रह है कि वे जीविका से जुड़े अपने अनुभवों /सफलता की कहानियों / कविता / गतिविधियों आदि को **''चेंज मेकर्स''** में प्रकाशन के लिए भेजें। रचना हिन्दी और अंग्रेजी या दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकती है। रचना के साथ उससे संबंधित तस्वीरें अवश्य संलग्न हों। रचनाकार अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता और संपर्क नंबर का उल्लेख अवश्य करें। रचना को निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं –

changemakers.brlp@gmail.com

प्रकाशन योग्य रचनाओं को रचनाकार के नाम के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

– संपादकीय टीम, चेंज मेकर्स

Mankind will be the winner

Mankind will be the winner

Tough the time
A real Test for Mankind
World is reeling through anxiety
Saving life is agenda Prime

Panicking is not the solution
Fight the threat with dedication
Prevention and precaution
Must be the day to day resolution

Social Distancing be the daily narration
Mask the mascot of the nation
Top on the agenda, overall sanitation
Helping hands will definetly find the solution

Befriend the natureConsume natural
Boost the immunity
Avoid the crowd
Refrain of proximity
Airy Around
Go out only on utmost necessity

No need to fear
Stay safe
Always be a warrior
By adopting certain well being behaviours
Mankind will be the winner

Anand Shankar
SPM-HR

JEEViKA Didis working as mates to assist MGNREGA workers in maintaining physical distancing

Returnee migrants being trained by JEEViKA on its scope and aspects

JEEViKA Didis engrossed in mask production activities

Sapling distribution under Harit Jeevika Harit Bihar Abhiyaan

बिहार सरकार

JEEViKA

Rural Development Department,Govt. of Bihar
Vidyut Bhawan - II,1st & 3rd Floor, Bailey Road, Patna- 800 021;
Ph.:+91-612-250 4981 :: Fax : +91-612-250 4960,
Website : www.brlp.in :: E-mail : ceo@brlp.in